॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
559

श्रीमदानन्दवर्धनाचार्यविरचितः

ध्वन्यालोकः

श्रीमदभिनवगुप्तपादविरचित'लोचन'सहितः
'भावप्रकाशिका'हिन्दीटीकोपेतश्च

व्याख्याकारः सम्पादकश्च
शिवप्रसाद द्विवेदी

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

विषयानुक्रम

विषय	पृष्ठ संख्या
किञ्चिन्निवेदनम्	1-51
पुरोवाक्	53-73

प्रथम उद्योतः

लोचन का मङ्गलाचरण	1
लोचनकार का परिचय	2
ध्वन्यालोकवृत्तिग्रन्थ का मङ्गलाचरण	2
वृत्तिग्रन्थ के मङ्गलाचरण की विस्तृत व्याख्या	3
स्वेच्छाकेसरिणः पद्य की प्रकारान्तर से व्याख्या	5
ध्वनि के विषय में तीन प्रकार की विप्रतिपत्तियाँ	6
अभाववादी ध्वनिविरोधी का पक्ष	11
अभाववादी ध्वनिविरोधियों का दूसरा पक्ष	12
ध्वनि के अभाववादियों के तृतीय पक्ष का उपस्थापन	12
प्रथम अभाववादी का पूर्वपक्ष	13
चारुत्व का भेदनिरूपण	16
वृत्तियाँ अनुप्रासजातियों से भिन्न नहीं है	18
काव्यस्थ वृत्तियों का अभिप्राय व्यापारवाचकता में नही है	19
रीतियाँ भी गुणों से भिन्न नहीं है	20
अभाववादियों का दूसरा विकल्प	21
अभाववादियों का तीसरा विकल्प	23
अभाववादी के मत का उपसंहार और मनोरथ कवि का श्लोक	24
अभावादियों के विकल्प का उपसंहार	28
भाक्तत्ववादियों का विकल्प	28
अलक्षणीयता वादियों का मत	31
अनुबन्ध चतुष्टय का निरूपण	32
ध्वनि के प्रकाशन का प्रधान प्रयोजन सहृदयहृदयाह्लादन है	33
चरम प्रयोजन का निरूपण	34
वृत्तिग्रन्थ के प्रत्येक पद की सार्थकता का प्रतिपादन	34
सहृदय लक्षण	35
भट्टनायक के मत का खण्डन	35
काव्य में आनन्दरूपी फल की प्रधानता का प्रतिपादन	36

इस शास्त्र का उद्देश्य
अग्रिम कारिका की अवतरणिका 37
काव्यात्मभूत अर्थ के दो भेद-वाच्यार्थ और प्रतीयमानार्थ 38
उपर्युक्त कारिका की व्याख्या 38
वाच्यार्थ का निरूपण 40
प्रतीयमान अर्थ की वाच्यार्थ से भिन्नता का प्रतिपादन 41
महाकवित्वनिरूपणम् 42
प्रतीयमान विवेचन 42
भ्रम धार्मिक इत्यादि पद्य की विस्तृत व्याख्या 44
मीमांसकों द्वारा निषेधरूप अर्थ के वाच्यार्थ होने की आशंका 47
भ्रम धार्मिक में विपरीत लक्षणा की उपस्थिति का खण्डन 48
भ्रम धार्मिक में लक्षणा नहीं है 48
सिंहो वटुः में काव्यत्व नहीं है 50
लक्षणा का प्रयोजन शब्द व्यापार का विषय है 50
अन्विताभिधानवादी भी ध्वनन व्यापार का अपालाप नहीं कर सकते हैं 52
भ्रम धार्मिक विषयक भट्टनायक के विचारों का खण्डन 55
निषेध रूप वाच्यार्थ के होने पर व्यंग्यार्थ के विधिरूप होने का उदाहरण 60
'अत्ताएत्थ' इत्यादि गाथा के विषय में भट्टनायक के विचारों का खण्डन 63
कहीं पर वाच्यार्थ के विधिरूप होने पर भी प्रतीयमानार्थ अनुभयात्मक होता है 64
प्रतिषेधरूप वाच्य से अनुभयात्मक व्यंग्य का उदाहरण 65
'दे' 'आ' इत्यादि गाथा की दूसरी व्याख्या 66
गाथा की तीसरी व्याख्या 67
वस्तुध्वनि का विषयकृत भेद के कारण वाच्यार्थ से भेद 68
रसादिध्वनि के वाच्यसामर्थ्याक्षिप्तत्व का प्रतिपादन है 69
रसादि भी वाच्यार्थ से भिन्न ही होते हैं 71
तात्पर्याशक्ति को ध्वनन नहीं कहा जा सकता है 76
प्रतीयमान रस ही काव्य की आत्मा है 77
भट्टनायक के मत का खण्डन 78
वृत्तिकार द्वारा 'मा निषाद' श्लोक की व्याख्या का विवेचन 80
प्रतीयमानार्थ के सद्भाव साधक प्रमाणान्तर का उपस्थापन 81
व्यंग्य के प्राधान्य का प्रतिपादन 85
कवियों द्वारा वाच्य एवं वाचक के उपादान का औचित्य प्रतिपादन 87
व्यंग्यार्थ के प्राधान्य का लोप न होने का कारण 88
ध्वनि काव्य का लक्षण 90
93

अलङ्कार में ध्वनि के अन्तर्भाव का खण्डन 96
समासोक्ति अलंकार में भी ध्वनि का अन्तर्भाव नहीं हो सकता है 98
आक्षेपालङ्कार में ध्वनि के अन्तर्भाव का खण्डन 101
प्राधान्य का नियामक चारुत्वोत्कर्ष ही है 104
व्यवहार भी प्रधान्यकृत ही होता है 105
विशेषोक्ति में ध्वनि के अन्तर्भाव का निषेध 107
पर्यायोक्तालङ्कार में ध्वनि के अन्तर्भाव का निषेध 109
अपह्नुति तथा दीपक अलङ्कारों में भी व्यंग्य; वाच्यार्थ का अनुयायी होता है 112
सङ्करालङ्कार में ध्वनि के अन्तर्भाव का निषेध 114
अप्रस्तुत प्रशंसा में ध्वनि के अन्तर्भाव का निषेध 118
अलङ्कारों में ध्वनि के अन्तर्भाव के खण्डन का उपसंहार 124
ध्वनि का मूल कारण 128
ध्वनि के अभाववादियों के खण्डन का उपसंहार 131
ध्वनि के दो मुख्य भेद और उनके उदाहरण 133
भक्तिवाद के प्रथम विकल्प का खण्डन 138
भाक्तवादियों के दूसरे विकल्प का खण्डन 140
ध्वनिव्यतिरिक्तस्थलों में औपचारिक प्रयोगों का उदाहरण 141
भक्ति के लक्षणत्वाभाव प्रतिपादन का उपसंहार 153
मीमांसकाभिमत गौणी और लक्षणा में भेद 154
चर्वणा के अलौकिकत्व का प्रतिपादन 157
भक्तिवादी के तीसरे विकल्प उपलक्षणवाद का खण्डन 161
ध्वनि के अलक्षणीयता वाद का खण्डन 163

द्वितीय उद्योतः

द्वितीय उद्योत की सङ्गति 165
अविवक्षित वाच्य के दो प्रकार के वाच्यार्थ 167
विवक्षितान्यपरवाच्य ध्वनि के दो भेद 174
भाव ध्वनि का निरूपण 177
व्यभिचारी भावों के विविध रूप 178
रसाभासादि के रसध्वनित्व का प्रतिपादन 180
रसवदलङ्कार से असंलक्ष्यक्रमध्वनि के विषय की भिन्नता 195
भट्टनायक के रस विषयक विचार 196
रसाधान के विषय में विभिन्न मत 198
लोचनकार कृत भट्टनायक के मत के खण्डन का उपसंहार 201

रसवदलङ्कार का निरूपण 205
रसवदलङ्कार के दो भेद— शुद्ध तथा सङ्कीर्ण 207
संकीर्ण रसवदलङ्कार का उदाहरण 209
चेतन तथा अचेतन के वर्णनभेद के आधार पर रसवदलङ्कार का उपमादि अलङ्कारों से भेद सम्भव नहीं 213
रसवदलङ्कार विवेचन का सोदाहरण उपसंहार 216
गुण तथा अलङ्कार में अन्तर 221
शृङ्गार प्रधान काव्य में माधुर्य गुण रहता है 222
विप्रलम्भशृङ्गार तथा करुण रस में माधुर्य का उत्तरोत्तर उत्कर्ष होता है 224
ओज गुण के आश्रय तथा उसके उदाहरण का निरूपण 225
प्रसाद गुण का आश्रय 229
काव्यदोषों के अनित्यत्व का विवेचन 235
असंलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि के भेद 236
शृङ्गार में अधिक शब्दालङ्कारों का प्रयोग उचित नही होता है 239
ध्वनि में प्रयोग के योग्य अलङ्कार 240
ध्वनि की आत्मा स्वरूप शृङ्गार के व्यञ्जक अलङ्कार 244
रूपकादि अलङ्कार वर्ग के अङ्गत्व के सम्पादक छह नियम 246
जिस अलङ्कार को कवि रस के अङ्ग रूप में कहना चाहता है का उदाहरण 246
जहाँ पर कवि अङ्गीरूप से अलङ्कार को नहीं कहता है, उसका उदाहरण 247
अङ्गरूप से विवक्षित अलङ्कार के उचित समय में ग्रहण का उदाहरण 249
काव्य में रस समीक्षा के चतुर्थ प्रकार का निरूपण 250
रससमीक्षा के पाञ्चवें प्रकार का निरूपण 257
रसपुष्टि के लिए अपेक्षित छठे रससमीक्षा के प्रकार का निरूपण 258
संलक्ष्यक्रमव्यंग्य ध्वनि के दो भेद 261
श्लेषालङ्कार से शब्दशक्तिमूलध्वनि के होने वाले भेद का निरूपण 262
भट्टोद्भट के मत का समन्वय 265
वृत्तिकार द्वारा श्लेषालङ्कार के विषयभूत अपने ही श्लोक का उपस्थापन 267
उपर्युक्त प्रकार के दो और उदाहरण 267
शब्दशक्तिमूलक संलक्ष्यक्रम व्यंग्य के विषय का निरूपण 272
'अत्रान्तरे' इत्यादि वाक्य के विषय में विभिन्न व्याख्याकारों के मत 274
शब्दशक्तिमूलध्वनि का दूसरा उदाहरण 276
शब्दशक्तिमूलध्वनि का तीसरा उदाहरण 277
विरोधाभासअलङ्कार ध्वनि 278

विरोधाभास अलङ्कार ध्वनि का वृत्तिकारदत्त उदाहरण 280
शब्दशक्तिमूलव्यतिरेकालङ्कार ध्वनि 282
अर्थशक्ति मूल संलक्ष्यक्रमव्यंग्यध्वनि का निरूपण 283
स्वशब्दवाच्य व्यंग्यार्थ ध्वनि नहीं होता है 288
शब्द शक्त्युत्थ ध्वनि का उदाहरण 289
अर्थशक्त्युत्थ संलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि का उदाहरण 291
शब्दार्थोभयशक्त्याक्षिप्त ध्वनि का उदाहरण 291
अर्थशक्त्युत्थ ध्वनि के भेद 292
कविप्रौढोक्तिमात्रसिद्ध अर्थशक्त्युत्थ ध्वनि का उदाहरण 293
कविनिवद्धवक्तृप्रौढोक्तिसिद्ध के तीन उदाहरण 294
अर्थशक्त्युत्थअलङ्कारध्वनि का निरूपण 296
अर्थालङ्कार की बहुलता का प्रतिपादन 297
अलङ्कारध्वनि में अलङ्कार की प्रधानता का प्रतिपादन 299
रूपकध्वनि का निरूपण 301
उपमाध्वनि का उदाहरण 304
आक्षेप ध्वनि का उदाहरण 306
व्यतिरेक ध्वनि का निरूपण 310
उत्प्रेक्षा ध्वनि का निरूपण 312
श्लेषध्वनिका उदाहरण 314
यथासंख्यध्वनि का उदाहरण 316
अलङ्कारध्वनि की प्रयोजनवत्ता का प्रतिपादन 322
अभिधामूल ध्वनि के गुणी भूतव्यंग्यत्व का प्रतिपादन 326
अविवक्षित वाच्य ध्वनि के गुणीभूत व्यङ्ग्यत्व का प्रतिपादन 330

तृतीय उद्योतः

व्यञ्जक की दृष्टि से ध्वनि के प्रभेदों का निरूपण 334
तृतीय उद्योत की सङ्गति 334
पूर्वपक्षी की व्याख्या का खण्डन 335
ध्वनि के पदप्रकाश्यता तथा वाक्यप्रकाश्यता का सोदाहरण निरूपण 335
अविवक्षितवाच्यध्वनि (लक्षणमूलध्वनि) के अर्थान्तरसंक्रमित वाच्यध्वनि का उदाहरण 337
अविवक्षितवाच्यध्वनि के अत्यन्ततिरस्कृतवाच्य के वाक्य प्रकाशता का उदाहरण 340
अविवक्षितवाच्य के अर्थान्तरसङ्क्रमित वाच्य ध्वनि की वाक्य प्रकाशता का उदाहरण 342

विवक्षितन्यपरवाच्यान्तर्गत संलक्ष्यक्रम व्यङ्ग्य के शब्द शक्त्युत्थ पदप्रकाशता का उदाहरण 344
विवक्षितान्यपरवाच्यध्वनि के संलक्ष्यक्रम व्यंग्य के शब्द शक्त्युत्थ की वाक्यप्रकाशता का उदाहरण 345
विवक्षितान्यपरवाच्य ध्वनि के कविप्रौढोक्तिसिद्ध अर्थ शक्त्युत्थ पद प्रकाशता का उदाहरण 346
विवक्षितान्यपरवाच्य ध्वनि के अर्थशक्त्युत्थ संलक्ष्यक्रम व्यंग्य की वाक्य प्रकाशता का उदाहरण 347
विवक्षितान्यपरवाच्य ध्वनि के स्वतः सम्भवी अर्थशक्त्युद्भव पद प्रकाशता का उदाहरण 349
संलक्ष्यक्रम व्यङ्ग्य के अर्थशक्त्युत्थ स्वतःसम्भवी वाक्य प्रकाशता का उदाहरण 349
ध्वनि के पदप्रकाशता के विषय में शङ्का और उसका समाधान 350
असंलक्ष्यक्रम व्यङ्ग्य के चार भेद 353
वर्णों की द्योतकता का समर्थन 354
असंलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यध्वनि की पदद्योत्यता का उदाहरण 356
पदांशद्योत्य असंलक्ष्यक्रमव्यंग्य ध्वनि का उदाहरण 359
वाक्यद्योत्य अलक्ष्यक्रमव्यंग्य ध्वनि का उदाहरण 360
अलङ्कारान्तरसंकीर्णवाक्यद्योत्य अलक्ष्यक्रमव्यंग्य ध्वनि का उदाहरण 361
संघटना के तीन भेद 363
संघटना का व्यञ्जकत्व 364
सङ्घटना और गुण के सम्बन्ध के विषय में तीन पक्ष 365
गुणों के सङ्घटनाश्रित मानने में दोष 366
गुणों के वास्तविक आश्रय का निरूपण 369
सङ्घटना का नियामक वक्तृऔचित्य तथा वाच्यऔचित्य हैं 377
सङ्घटना का नियामक काव्य का प्रकार भेद भी है 384
गद्यकाव्यों में भी उपर्युक्त औचित्य आवश्यक है 390
रसबन्ध के औचित्य की सर्वत्र अपेक्षा होती है 391
प्रबन्ध की व्यञ्जकता का निरूपण 392
काव्य में प्रकृत्यौचित्य का निर्वाह आवश्यक होता है 395
काव्य अथवा नाटक में सुरतक्रीडा आदि का वर्णन असभ्य है 397
प्रबन्ध के रसाभिव्यञ्जकत्व का प्रथम हेतु 401
प्रबन्ध के रसाभिव्यञ्जकत्व के दूसरे साधन का निरूपण 401
प्रबन्ध के रसाभिव्यञ्जकत्व के प्रयोजक तीसरे हेतु का निरूपण 402
प्रधानकथा के पञ्चसन्धित्व तथा पञ्चसन्ध्यङ्गता को सर्वजन संवेद्य होना चाहिए 405

प्रासङ्गिक इतिवृत्त में इस तरह का नियम नहीं है 405
प्रबन्ध के रसादि व्यञ्जकता के चतुर्थ कारण का निरूपण 407
प्रबन्ध के द्वारा रसाभिव्यक्ति के पाँचवें (अन्तिम) साधन का निरूपण 410
संलक्ष्यक्रम व्यङ्ग्य वाले भी प्रबन्ध रसाभिव्यञ्जक होते हैं 411
सुप्तिङ्आदि पदांशों की व्यञ्जकता का निरूपण 413
सुबन्त के व्यञ्जकत्व का उदाहरण 419
तिङन्त की व्यञ्जकता का उदाहरण 419
सम्बन्ध की व्यञ्जकता का उदाहरण 421
निपातों के व्यञ्जकत्व का उदाहरण 422
उपसर्गों के व्यञ्जकत्व का उदाहरण 423
एक साथ दो-तीन निपातों के भी निर्दोषत्व का प्रतिपादन 425
काल की व्यञ्जकता का उदाहरण 426
सुप् आदि व्यञ्जक भी होते हैं इस अर्थ का समर्थन 429
रस के विरोधी और उनका परिहार 432
प्रथम रसविरोधी का निरूपण 434
रसविरोध का दूसरा हेतु 436
रसभङ्ग का तीसरा हेतु 437
रसभङ्ग के चतुर्थ हेतु का निरुपण 439
रसभङ्ग के पाँचवें हेतु का निरुपण 439
रसविरोधियों के वर्णन का उपसंहार 440
विरोधिरसाङ्गों के निबन्धन के नियम 441
विरोधिरसाङ्गों के वाध्य रूप से अविरोध का उदाहरण 445
विरोधी रसाङ्गों के स्वाभाविक अङ्गरूपता में विरोधाभाव का उदाहरण 446
एक प्रधान के अन्तर्गत अङ्गभूत दो विरोधी रसाङ्गों के अविरोध का उदाहरण 448
एक काव्या में एक ही रस की प्रधानता होनी चाहिए 458
एक रस की मुख्यता का प्रतिपादन 459
विरोधी रसान्तरों के परिपोष परिहार का प्रथम प्रकार 463
अङ्गी रस के विरोधी रसों के परिपोष के परिहार का दूसरा तथा तीसरा प्रकार 466
एकाश्रय में विरोधी रसों का अविरोध प्रतिपादन प्रकार 471
नैरन्तर्य विरोधी रसों में अविरोध सम्पादन का प्रकार 472
शान्त रस के स्वतन्त्र रसत्व का प्रतिपादन 475
शान्त रस के सर्वश्रेष्ठ रसत्व का प्रतिपादन 477
परस्पर विरोधी रसों में व्यवधान द्वारा अविरोध का प्रतिपादन 479

सत्कवि को शृङ्गार रस के विषय में अत्यधिक सावधान होना चाहिए
विरोधी रसों में भी शृङ्गार का संस्पर्श रहता है 480
रसादि विषयक वाच्य एवं वाचक को औचित्य से जोड़ना भी महाकवि का मुख्य कार्य है 481
वृत्तियों का विवेचन 485
रस के आत्मत्व का प्रतिपादन 486
रस में क्रमराहित्य नहीं अपितु अलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यत्व होता है 488
संलक्ष्यक्रमव्यंग्य ध्वनि में व्यंग्य का क्रम प्रतीत होता है 490
संलक्ष्यक्रम व्यंङ्ग्य में क्रम 496
अविवक्षितवाच्य ध्वनि में भी क्रम रहता है 497
व्यङ्ग्य एवं व्यञ्जकभाव रूप सम्बन्ध का प्रतिपादन 499
वाच्य एवं व्यङ्ग्य के स्वरूप की भिन्नता भी व्यञ्जकत्व को सिद्ध करती है 501
भट्टादि अभिमत पदार्थवाक्यार्थन्याय का निरास 505
सिद्धान्तानुसार वाच्यार्थ और व्यङ्ग्यार्थ में घटप्रदीप न्याय है 507
आश्रय की भिन्नता के कारण भी व्यञ्जकत्व की सिद्धि होती है 508
व्यञ्जकत्व का उपचार तथा गौणी वृत्ति से प्रथम भेद 511
गौणी वृत्ति से व्यञ्जकत्व के स्वरूप का दूसरा तथा तीसरा भेद 512
गुणवृत्ति तथा व्यञ्जकत्व के स्वरूपभेद के प्रतिपादन का उपसंहार 513
गुणवृत्ति और व्यञ्जकत्व के विषय भेद का निरूपण 513
लक्षणामूलध्वनि तथा गौणीलक्षणा में अभेद की शङ्का और परिहार 515
प्रयोजनवती लक्षणा भी अविवक्षितावाच्य ध्वनि से भिन्न है 519
मीमांसकों को भी व्यञ्जकत्व स्वीकार करना आवश्यक है 524
वैयाकरणों का सिद्धान्त ध्वनिसिद्धान्त के अनुकूल है 527
न्यायमत भी व्यञ्जकत्व के अनुकूल है 332
अनुमितिवाद का खण्डन 533
उपर्युक्त पौढिवाद का खण्डन 536
अनुमितिवादी के खण्डन का उपसंहार 537
गुणीभूतव्यङ्ग्यकाव्य का निरूपण 542
गुणीभूत व्यङ्ग्य का उदाहरण 545
प्रबन्ध काव्यों में गुणीभूत व्यङ्ग्य 547
व्यङ्ग्य के संस्पर्श से ही वाच्य अलङ्कार समूह की भी शोभा होती है 550
गुणीभूतव्यङ्ग्यत्व रूपक व्यतिरिक्त अलङ्कारों में भी रहता है 551
गुणीभूतव्यङ्ग्यता के उदाहरणभूत अलङ्कारों की अलङ्कार गर्भता के तीन प्रकार 556
अलङ्कारान्तरों के गुणीभूत व्यङ्ग्यत्व के प्रतिपादन का उपसंहार 558
काक्वाक्षिप्त गुणीभूतव्यङ्ग्य का निरूपण 562
564

काकुध्वनि मानने वालों के मत का खण्डन 567
गुणीभूत व्यङ्ग्य का ध्वनि के रूप में पर्यवसान 570
लावण्यद्रविण इत्यादि श्लोक में अप्रस्तुत प्रशंसा का प्रतिपादन 573
अप्रस्तुत प्रशंसा में वाच्य के त्रैविध्य का प्रतिपादन 579
चित्रकाव्य का निरूपण 583
ध्वनि के सङ्कर तथा संसृष्टि के कारण भेदों का निरूपण 592
ध्वनि के अपने भेदों के साथ सङ्कर और संसृष्टि का निरूपण 593
गुणीभूत व्यङ्ग्य के साथ ध्वनि के सङ्कर का निरूपण 596
गुणीभूतव्यङ्ग्य तथा ध्वनि की संसृष्टि का निरूपण 600
वाच्यालङ्कारों के साथ ध्वनि तथा गुणीभूत व्यङ्ग्य के सङ्कर तथा संसृष्टि का उपपादन 600
रीतियों की अनुपयोगिता 612
ध्वनि निरूपण के बाद वृत्तियों की भी कोई उपयोगिता नहीं 613

चतुर्थ उद्योतः

ध्वनि और गुणीभूतव्यङ्ग्य काव्य के निरूपण का प्रयोजनान्तर 619
अविवक्षित वाच्य ध्वनि के दोनों प्रभेदों के आश्रयण से अर्थ की नवीनता का उदाहरण 621
रसादि की अनुसर्तव्यता का प्रतिपादन 626
उपर्युक्त अर्थ का प्रकारान्तर से उपपादन 628
काव्य में कवि को रसादिध्वनि के ही विषय में प्रयत्नशील होना चाहिए 631
प्रबन्ध में अङ्गीरस एक ही होना चाहिए 632
रसादि व्यङ्ग्य के आश्रयण से काव्य में शोभातिशय का सोदाहरण उपपादन 639
ध्वनि तथा गुणीभूत व्यङ्ग्य के समाश्रयण से वर्ण्य विषय की अनन्तता का प्रतिपादन 643
वाच्यार्थ की भी दृष्टि से अर्थ का आनन्त्य होता है 645
अवस्था भेद के कारण काव्यार्थ की नवीनता का उदाहरण 647
देशभेद के कारण काव्यार्थ में आनन्त्य आता है 650
कालभेद तथा स्वालक्षण्य भेद के कारण वाच्यार्थ (काव्यार्थ) के आनन्त्य का प्रतिपादन 650
रसाश्रयण से ही काव्यार्थ में आनन्त्य आता है 655
संवाद निरूपण 657
पुरानी काव्य वस्तुओं से साम्य रखने वाली काव्य वस्तु की रचना में कोई दोष नहीं है 661

प्राचीन कवियों द्वारा वर्णित अर्थ के अनुकरण की स्पृहा से रहित सुकवि की बुद्धि में सरस्वती स्वयं नवीन अर्थों को प्रकट कर देती है 663
ग्रन्थोपसंहार 665

परिशिष्ट- 1

ध्वन्यालोक कारिकापाठः 669

परिशिष्ट-2

ध्वनिकारिकार्थसूची 677

प्रथम उद्योते

प्रश्नाः

वस्तुनिष्ठानि प्रश्नोत्तराणि पृष्ठाङ्कः

1. ध्वन्यालोकस्य कर्तृत्वविषये समालोचकानां मतभेदमुपन्यस्य समन्वयत। 681
2. आनन्दवर्धनाचार्यस्यैतिह्यं लिखत। 682
3. अभिनवगुप्तपादस्यैतिह्यं निरूप्य तस्य ध्वनिसम्प्रदाये अवदानं वर्णयत। 684
4. स्वेच्छाकेसरिणः इति पद्यं ध्वन्यालोकलोचन दिशाव्याकुरुत। 686
5. 'स्वच्छायायासितेन्दवः प्रपन्नार्तिछिदो नखाः' इत्यत्र भट्टेन्दुराजेन केन प्रकारेण ध्वनेः त्रैविध्यं साधितम्? 686
6. ध्वन्यालोकानुसारेण ध्वन्याभाववादिनां मतमनूद्य निराकुरुत। 687
7. 'भाक्तमाहुस्तमन्ये' इति कारिकांशं लोचनानुसारेण व्याकरोतु। 688
8. 'तेन ब्रूमः सहृदयमनः प्रीतये तत्स्वरूपम्।' इति कारिकांशं व्याकुरुत। 689
9. प्रतीयमानाख्यस्यार्थस्थ निरूपिकां कारिकां विलिख्य तस्याः वृतिलोचनयोरालोके व्याख्या करणीया। 690
10. योऽर्थं सहृदयश्लाध्यः काव्यात्मेति व्यवस्थितः। वाच्यप्रतीयमानाख्यौ तस्य भेदावुभौ स्मृतौ। इति कारिकां व्याकुरुत। 691
11. कस्य व ण होइ रोसो दटठूण पियाएँ सव्वणं अहरम्। सभमरपउमग्धाइणि वारिअवामे सहसु एह्यिम्।। इति गाथां संस्कृतेनानूद्य तंत्र प्रतीयमानानां व्यङ्ग्यानांवहुविधानां निरूपणं कुरुत। 691
12. आनन्दवर्धनाचार्यकृतां ध्वनेः काव्यात्मत्वस्य ऐतिहासिकत्व समर्थिकां कारिकां विलिख्य व्याकरोतु। 692
13. ध्वनेः स्वरूपं निरूपयत।

अथवा

ध्वनिस्वरूपप्रतिपादिकां कारिकां विलिख्य तस्याः व्याख्यां वृत्तिलोचन ग्रन्थयोरालोके कुरुत। 693
आनन्दवर्धनाचार्यः ध्वनेर्भक्तित्वनिषेधं केन प्रकारेणाकरोत्? 694

लघूत्तरीयाणि प्रश्नोत्तराणि

1. अपूर्वं यद् वस्तु0 इत्यादिकं श्लोकं व्याकुरुत। 695
2. लोचनानुसारेण नागरिकोपनागरिकाग्राम्यवृत्तीनां स्वरूपं निरूपयत। 695
3. 'भ्रमधार्मिक विस्रब्धः' इति पद्ये अभिनवगुप्तोक्तदिशा- व्यङ्ग्यस्य निषेधरूपतां प्रतिपादयत। 696
4. यत्र निषेधरूपे वाच्ये विधिरूपं व्यङ्ग्यं भवति तस्योदाहरणमुपस्थाप्य लोचनदिशा व्याख्या कार्या। 696
5. विधिरूपे वाच्ये अनुभयरूपस्य व्यङ्ग्यस्योदाहरणं निरूप्य व्याकुरुत्। 697
6. "यथा पदार्थद्वारेणे" त्यादिकां कारिकां समग्रतया विलिख्य तस्यार्थं स्पष्टयत। 697
7. समासोक्तौ ध्वनेरन्तर्भावः कथं न भवति? 698
8. आक्षेपालङ्कारे ध्वनेरन्तर्भावः कथं न भवति? 698
9. विशेषोक्तौ ध्वनेरन्तर्भावः कथं न भवति? 698
10. केष्वलङ्कारेषु पूर्वपक्षिणः ध्वनेरन्तर्भावस्य शङ्कामकार्षुः? 699
11. अविवक्षितवाच्यध्वनेरुदाहरणं लिखित्वा तस्यार्थं वृत्तिग्रन्थलोचनयोरालोके लिखत। 699
12. विवक्षितान्यपरवाच्यध्वनेरुदाहरणं विलिख्यतस्यार्थो लेखनीयः। 699

अतिलघूत्तरीयाणि प्रश्नोत्तराणि 700-701

द्वितीय उद्योते

वस्तुनिष्ठानिप्रश्नोत्तराणि

1. अविवक्षितावाच्य ध्वनेः अर्थान्तरसङ्क्रमितात्यन्ततिरस्कृतयोः भेदयोः स्वरूपं निरूप्योभयोः द्वे-द्वे उदाहरणे प्रदर्श्य तेषां व्याख्या करणीया। 702
2. असंलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्य ध्वनौ केषामलङ्काराणां प्रयोगः कर्तव्यः? 703
3. रसप्रधाने काव्ये रूपकाद्यलङ्कारवर्गस्य सन्निवेशस्य नियमेषु चतुर्थं नियमं विलिख्य 'रक्तस्त्वम् इत्यादिश्लोकेऽलङ्कारस्य निर्णयं ध्वन्यालोकलोचन योरालोके कुर्वन्तु। 704
4. ध्वन्यालोके वर्णितदिशा शब्दशक्तिमूलध्वनिश्लेषयोः विषयं विवेचयन्तु। 706
5. शब्दशक्तिमूलस्य ध्वनेः ध्वन्यालोकानुसारेण विषयाणां विवेचनं करोतु। 707
6. अर्थशक्त्युथ ध्वनेः स्वरूपं निरूप्यतस्योदहरणानि उपस्थापयत। 708
7. ध्वन्यालोकदिशा अभिधामूलध्वनेः गुणीभूत व्यङ्ग्यत्वं सोदाहरणं निरूपयत। 709

लघूत्तरीयणि प्रश्नोत्तराणि

1. रसभावतदाभासेत्यादिकां कारिकां लिखित्वा तस्या अर्थं लिखन्तु।

अथवा

रसभावादिकानामङ्गित्वे ध्वनिर्भवति वा नहि? इति कारिकानिर्देश पुरस्सरं निर्णयन्तु। 710

2. रसवदाद्यलङ्कारस्य विषयं निरूप्यत स्वभेदान् निरूपयन्तु। 710
3. ओजोगुणस्याश्रयं निरूप्य तस्योदाहरणमुपस्थापयत। 711
4. प्रसादगुणस्याश्रयं निरूपयत। 711
5. अङ्गिनि शृङ्गारे अनुप्रासादिकानां शब्दालङ्काराणां अधिकं निबन्धनं अनुकूलं भवति न वा? 712
6. असंलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यध्वनौ रूपकाद्यलङ्कारवर्गस्य कति नियमाः सन्ति, किञ्च ते नियमाः के सन्ति? 712
7. अङ्गरूपेणालङ्कारवर्गं समीक्षाया द्वयोः नियमयोः सोदाहरणं वर्णनं कुरुत। 713
8. रसादिसमीक्षाया तृतीयं प्रकारं सोदाहरणं लिखतु। 713
9. रसनिबन्धनेऽलङ्कारसन्निवेशविषयिणीं पञ्चमीं समीक्षां सोदाहरणं निरूपयत। 714
10. रसनिबन्धने षष्ठस्य समीक्षाप्रकारस्य सोदाहरणं निरूपणं कुरुत। 714
11. शब्दशक्त्या साक्षादलङ्कारान्तरप्रतिभाया उदाहरणानि लिखित्वा विवेचयन्तु ध्वन्यालोक दिशा। 715
अतिलघूत्तरीयाणि प्रश्नोत्तराणि 716-718

तृतीय उद्योते

वस्तुनिष्ठानि प्रश्नोत्तराणि

1. गुणानाश्रित्य तिष्ठन्ती माधुर्यादीन् व्यनक्ति सा। रसान्...। इति कारिकां ध्वन्यालोकदिशा व्याकुर्वन्तु। 719
2. सङ्घटनाया नियामकं तत्त्वं किम्? 720
3. सङ्घटनाया नियामकः काव्यप्रकाराणां विषयगतमौचित्यमपि भवतीति ध्वन्यालोकदिशा निरूपयत। 721
4. प्रबन्धे कस्यचनैकस्य रसस्य मुख्यताप्रतिपादनप्रकारं निरूपयत। 723
5. रसस्य उभयोरपिवृत्त्योः आत्मत्वमुपपाद्य रसस्यालक्ष्य क्रमव्यङ्ग्यतामुपपादयत। 723
6. शब्दशक्तिमूलार्थशक्तिमूलयोः संलक्ष्यक्रम व्यङ्ग्ययोः वाच्य व्यङ्ग्ययोः प्रतीतौ क्रमं प्रदर्शयत। 723
7. गौणीवृत्तिलक्षणाभ्यां व्यञ्जकत्वस्यभेदं प्रतिपादयन्तु। 724
8. ध्वन्यालोकानुसारेण गुणीभूतव्यङ्ग्यस्य निरूपणं कुर्वन्तु। 725
9. गुणीभूतव्यङ्ग्यस्य ध्वन्यालोक दिशा ध्वनौ पर्यवसानं निरूपयत। 726
10. रीतिवृत्त्योरनुपयोगितां प्रतिपादयन्तु। 726

लघूतरीयाणि प्रश्नोत्तराणि

1. ध्वन्यालोकदिशा एकाश्रय विरोधिरसानां अविरोधसम्पादन प्रकारं लिखन्तु। 727
2. नैरन्तर्य विरोधिनां रसानामविरोधसम्पादन प्रकारं वर्णयत। 728
3. शान्तरसस्य विषये समालोचकानां मतोपन्यासपूर्वकं शान्त रसस्य स्थितिं आनन्दवर्धनाचार्योक्तप्रकारेण निरूपयत। 728

4. विरोधिरसेषु व्यवधानेन द्वारा विरोधाभावसम्पादनस्य प्रकारं निरूपयत। 729
5. विरोधिरसेष्वपि शृङ्गारस्य स्थितिर्भवतीति प्रतिपादयत। 729
6. वृत्तेः स्वरूपं निरूपयत। 729
7. अविवक्षितवाच्य ध्वनौ वाच्यव्यङ्ग्ययोः क्रमो भवति न वेति विचार्यताम्। 730
8. व्यङ्ग्यव्यञ्जकभावस्य सिद्धिं कुरुत। 730
9. न्यायमतस्य व्यञ्जकत्वानुकूलतां प्रतिपादयन्तु। 730
10. अविवक्षितवाच्यध्वनेः अत्यन्ततिरस्कृतवाच्य-अर्थान्तर-संक्रमित वाच्ययोः पद प्रकाश्यताया उदाहरणानि विलिख्य तत्र प्रकाशकपदानां निरूपणं कुरुत। 731
11. अविवक्षितवाच्यस्यार्थान्तर सङ्क्रमितात्यंतिरिस्कृतवाच्ययोर्वाक्य प्रकाशताया उदाहरणानि निरूपयत। 732
12. विवक्षिताभिधेयस्यानुरणनरूपव्यङ्ग्यस्य शब्दशक्त्युत्थप्रभेदे पदप्रकाशताया उदाहरणं लिखत। 732
13. विवक्षितान्यपरवाच्यध्वनेः संलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यस्य शब्दशक्त्युत्थ प्रभेदस्य वाक्यप्रकाशताया उदाहरणम् लिखत। 732
14. चूताङ्कुरावतंसं क्षणप्रसरमहार्धमनोहरसुरामोदम्।
असमर्पितमपि गृहीतं कुसुमशरेण मधुमासलक्ष्मीमुखम्।।
अस्मिन् पद्ये ध्वनेः कः प्रभेदो विद्यते? 733
15. विवक्षितान्यपरवाच्य ध्वनेः स्वतः सम्भविशरीरार्थ- शक्त्युत्थप्रभेदे पदप्रकाशताया उदाहरणं विलिख्य तत्र लक्षणसमन्वयं कुरुत। 733
16. 'काव्यविशेषो हि ध्वनिरित्याह आदौ' तस्य काव्यविशेषस्य पदप्रकाशता कथं भवितुमर्हतीति आनन्दवर्धनाचार्यानुसारेण समाधत। 733
17. वर्णानां असंलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यध्वनिप्रकाशकत्वविषये संभाविनीं शङ्कां निरासयन्तु। 734
18. सङ्घटनायास्वरूपं निरूप्य तस्यास्त्रैविध्यं निरूपयत। 734
19. गद्यकाव्ये सङ्घटनाया नियामकविषये ध्वनिकारस्याभिप्रायं लिखत। 734
20. असंलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यध्वनेः प्रबन्धगत रसादिकस्या- भिव्यञ्जकाः हेतवः कति के च ते? 735
21. 'न्यवकारो ह्ययमेव मे' इति श्लोकं सम्पूर्णरूपेण लिखित्वा तत्रविद्यमानानां व्यञ्जकपदानां निर्देशं कुरुत। 735
22. कविभिः परिहरणीयाः रसविरोधिनः कति सन्ति? के च ते? 736
23. ध्वनिकारोक्तो रसभङ्गस्य द्वितीयो हेतुर्वर्णनीयः। 736
24. ध्वनिकारोक्तं रसभङ्गस्यं तृतीयं हेतुं निरूप्य तस्य ध्वन्यालोक दिशा व्याख्या कर्तव्या। 736
25. ध्वन्यालोकदिशा रसभङ्गस्य चतुर्थं हेतुं वर्णयत। 737
26. रसभङ्गस्य पञ्चमस्य हेतो वर्णनं कुरुत। 737
अतिलघूत्तरीयाणि प्रश्नोत्तराणि 737-739

चतुर्थ उद्योते

वस्तुनिष्ठानि प्रश्नोत्तराणि

1. महाभारतस्याङ्गिरसः शान्तो वर्तत इति ध्वन्यालोकदिशा प्रतिपादयन्तु। 740

लघूत्तरीयाणि प्रश्नोत्तराणि

1. रामयणेऽङ्गीरसः कः? 741
2. ध्वनेरित्थमित्यादिकारिकां विलिख्य ध्वन्यालोकानुसारेण तद्व्याख्या कर्तव्या। 741

अतिलघूत्तरीयाणि प्रश्नोत्तराणि

741-742

❋